रूपरेखा

प्रस्तावना

अर्थ

परिभाषा

सामूहिक सेवा कार्य के सिध्दांत

सामूहिक कार्यकर्ता की भूमिका

निष्कर्ष

संदर्भग्रंथ

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामूहिक प्राणीी है वह समुह से पृथक किसी भी स्थिति में नही रह सकता समूह का निर्माण कर वह सुरक्षा शिक्षा सामाजिक काय अन्वेषन उपचार उन्नति सलाह प्रशासन सहयोग एकीकरण तथा नियोजन के लिय काय करता हैं।

सामूहिक काय व्यक्ति के सामाजिक विकास का एक मौलिक ढंग हैं, इसका स्वरूप मनोरंजन तथा विकासात्मक है कायकर्ता सामूहिक काय प्रणाली दवारा समूह सदस्यो के विकास उन्नति शिक्षा सांस्कृतिक प्रगति पर जोर देता है । कायकर्ता सदस्यों के साथ जिस स्तर से काय करना शुरू करे उसका उददेश्य निरंतर विकास करना होता है । यहॉ सामाजिकता से मनुष्य को आस्तित्व प्रदान किया है वही पर दरिद्रता विर्धनता बेरोजगारी स्वास्थ विचलन समायोजन संबंधी समस्याओं का विकास हुआ है ।

अर्थ

- उपरोक्त परिभाषाओं के विषलेषण के आधार पर सामूहिक सेवा कार्य के अर्थ पर प्रकाश डाला जा सकता है ।

1 वैज्ञानिक ज्ञान प्रविधि सिध्दान्तों एवं कुशलता पर आधारित प्रणाली।

2 समूह मे व्यक्ति पर बल।

3 किसी कल्याणकारी संस्था के तत्वाधान में किया जाता है

4 व्यक्ति कि सहायता समूह के माध्यम से कि जाती है ।

5 सेवा संबंधी किया कलाप में समूह स्वयं एक उपकरण होता है ।

6 इससे प्रशिक्षित कार्यकर्ता कार्यकमों संबंधी कियाकलापो में अतः कियाओं का मार्गदर्शन करने में ज्ञान नियुक्त व अनुभव को प्रयोग करता है ।

7 सामूहिक सेवाकार्य के अन्तर्गत समूह मे व्यक्ति का समुदाय के अंश स्वरूप केन्द्र बिन्दु होता है ।

8 सामूहिक सेवाकार्य अभ्यास में केद्रिय या मूल तत्व सामूहिक संबंधो को सचेत व निर्देशित प्रयोग है ।

परिभाषा

टैकर के अनुसार ➡

सामाजिक सामूहिक कार्य एक प्रणाली है । जिसके दवारा व्यक्तियों की सामाजिक संस्थाओं के अन्तर्गत समूहो में एक कार्यकर्ता कार्यकम संबंधी कियाओं में व्यक्तिओं के परस्पर संबंध प्रकिया का मार्ग दर्शन करता है जिससे वे एक दुसरे से संबंध स्थापित कर सके और वैयक्तिक सामूहिक एवं आवश्यकताओं एवं क्षमताओ अनुसार विकास के सुवसरो को अनुभव करें।

➡

कोनीप्का के आनुसार

- सामाजिक समुह कार्य समाज की एक प्रणाली है जो व्यक्तियो की सामाजिक कार्यात्मकता बढाने में सहायता प्रदान करती है, उददेश्य पूर्ण सामूहिक अनुभव दवारा व्यक्तिगत सामूहिक और सामुदायिक समस्याओं की ओर प्रभावकारी ढंग से सुलझाने में सहायता प्रंदान करती है।

सामूहिक सेवाकार्य के सिध्दान्त

1 नियोजन का सिध्दांत

2 लक्ष्यो की स्पष्टता का सिध्दांत

3 सोद्देश्य संबंध का सिध्दांत

4 निरन्तर सामूहिक अन्तःकिया का सिध्दांत

5 निर्देशित सामूहिक अतः किया का सिध्दांत

6 प्रगतिशील कायकम अनुभवों का सिध्दांत

7 लोचदार कार्यात्मक संगठन का सिध्दांत

8 जनतन्त्रीय सामूहिक आत्मनिश्चियोकरण का सिध्दांत

9 साधनोके उपयोग का सिध्दांत

10 मूल्यांकन का सिध्दांत

समूहिक कार्यकर्ता की भूमिका

1 सार्थक कर्ता की भूमिका

2 पद प्रदर्शक के रूप में

3 अधिवकता के रूप में

4 विशेषज्ञ के रूप में

5 चिकित्सक के रूप में

6 परिवर्तक के रूप में

7 सूचनादाता के रूप मे

8 सहायक के रूप मे

निष्कर्ष:—

- समाजिक समूहिक कार्यकर्ता अपने कार्य क्षेत्र मे सेवाकार्य में बहुत सारी भूमिकाओ का निवाह करता है जिससे समूह के बीच तालमेल घनिष्ट होता है साथ हि समाज के विभिन्न क्षेत्रो में सामूहिक कार्य दवारा कार्यकर्ता वैज्ञानिक ज्ञान व अपने स्वयं के विचार से सेवाकार्य कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है ।
- साथ.साथ अपने लिये व्यक्तिगत व्यवहार का भी परिचय देता है और समुह के सिध्दांतो व कार्यो को लेकर कार्य करता है जिससे वह लक्ष्य तक असानी से पहुच सकता है।

संदर्भग्रंथ सूची:–

मिश्रा पी डी सामाजिक सामूहिक सेवा कार्य

दिवेदी मनीष समाज कार्य

शास्त्री ए एन इनाम व्यवसायिक समाज कार्य

धन्यवाद